शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir

अप्रैल २०२०, संस्करण ३३

मैं मानता हूँ कि प्रति दिवस Women's Day, Mother's Day, Father's Day होना चाहिए ।

प्रिय आत्मन् ! सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्धमार्ग पत्रिका का तेतीसवाँ अंक प्रस्तुत है। इस अंक में महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व "मातृशक्ति दिवस" पर दिये गए प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं।

श्री गुरुदेव

सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत। आज के दिन 8 मार्च को लोग Women's Day ऐसा करके मनाते हैं। मई में आता है Mother's Day और मार्च में ये दिवस आता है। मैं मानता हूँ कि प्रति दिवस Women's Day, Mother's Day, Father's Day होना चाहिए। ये व्यवसाय वालों ने इसका व्यवसाय बना लिया है और हमारी गलती ये है कि हम ये सब भूल गये हैं और वे लोग इस अवसर का लाभ उठा रहे हैं। हमारे शास्त्र भी कहते हैं कि परमात्मा ने हमें ऐसी शक्ति दी है जिसके माध्यम से हम देख सकते हैं, सुन सकते हैं, बोल सकते हैं और सबसे बड़ी बात श्वास पर श्वास ले सकते हैं परन्तु मनुष्य ये भूल जाता है कि हमें शास्त्रों के द्वारा कहे गये कथनों पर ही चलना है। हमारे यहाँ सादगी भरा जीवन जीने को बताया जाता है किन्तु हम वो भूल जाते हैं, भूलने के कई कारण हो सकते हैं परन्तु हम भूल जाते हैं। मातृशाक्ति क्या है? इस बारे में एक सत्य घटना

वास्तव में प्रौढ़ता आपकी बुद्धि की समझ, नम्रता और उस नम्रता के साथ आपका प्रेम है।

है कि हमारे यहाँ तीन-चार साल पहले गोशाला में एक गाय बच्चा देकर मर गयी और उसी दिन एक गाय की बच्ची भी मर गयी। उन गायों का तो जो क्रिया-कर्म था वो किया गया परन्तु उस गाय ने उस बच्चे को अपना लिया यद्यपि वो बच्चा उस गाय का नहीं था फिर भी गाय ने उस बच्चे को अपना दूध पीने दिया। संसार में हम प्राय: देखते हैं कि एक जानवर दूसरे किसी भी जानवर के बच्चे को अपना लेता है क्योंकि वह जान जाता है कि इसकी माँ नहीं है।

जब हम एक दिवस ये सारे दिन, महिला दिवस, मातृदिवस या पितृदिवस मनाते हैं तो साल के अन्य दिनों का क्या? प्रत्येक व्यक्ति अपने संस्कारों के साथ जन्म लेता है, संस्कारों के साथ कर्म बनते हैं, कर्म उसके जीवन में परिस्थितियां बनाते हैं, परिस्थितियों से उसके मन का निर्माण होता है। हम विद्यालय में जाते हैं तो वहाँ की अपनी समस्याएं हैं , मित्र मण्डली की अपनी समस्याएं हैं फिर इन सारी बातों को लेकर एक मनुष्य का निर्माण होता है। आद्य शंकराचार्यजी कहते हैं- **'तरुणस्तावद्तरुणी रक्ता'** अर्थात् युवावस्था तो हमारी यों ही व्यतीत हो जाती है। क्योंकि इस अवस्था में हमें कुछ भी समझ नहीं आता है। हमें कोई कुछ कहता है तो हमें लगता है कि ये हमें क्या कह रहा है? मैं इसमें से क्या समझूं और इसको क्या बोलूं? हम सभी अपनी छोटी बुद्धि के साथ ही सोचते हैं जबकि शास्त्र कहता है बड़ी सोच के साथ अपना जीवन यापन करो। बड़ी सोच यूं ही नहीं आ जाती है, समय लगता है क्योंकि हम अपने जीवन के शुरुआती 25 वर्ष तो यों ही निकाल देते हैं। इसके बाद के 12 वर्ष हम अपनी जवानी के जोश में निकाल देते हैं। जवानी का जोश ठीक होते-होते 40 वर्ष जीवन के व्यतीत हो जाते हैं। कुछ लोग इसी काल को प्रौढ़ता समझ बैठते हैं लेकिन वास्तव में ये प्रौढ़ता नहीं है। प्रौढ़ता आने में बहुत समय लगता है। जीवन में गम्भीर हो जाना, अपने आप को सर्वज्ञानी समझ लेना प्रौढ़ता नहीं है, शास्त्र इसे आपकी बुद्धि के अहंकार का नाम देते हैं। वास्तव में प्रौढ़ता आपकी बुद्धि की समझ, नम्रता और उस नम्रता के साथ आपका प्रेम है। विश्वभर में लोग ये प्रश्न करते हैं कि भारतवर्ष में इतनी शक्ति की पूजा की जाती है तो फिर

महिलाओं के साथ ऐसी घटनाएं क्यों घटती हैं तो लोग शास्त्रों पर प्रश्न उठाना प्रारम्भ कर देते हैं। मेरे विचार से शास्त्र ठीक हैं, शास्त्र को पढ़ने,समझने वाला कैसा है और उसने क्या समझा ये मुख्य बात है। शास्त्र किस भाव से लिखा गया है ये हम नहीं समझ पाते, हम केवल थोड़ा सा पढ़ लेते हैं और समझते हैं कि मैं सब समझ गया हूँ। वास्तव में मैं क्या समझा? मैं तो थोड़ा ही समझा न? और उस थोड़े में मैं किसे समझा सकता हूँ।

शास्त्र को पढ़ने,समझने वाला कैसा है और उसने क्या समझा ये मुख्य बात है। शास्त्र किस भाव से लिखा गया है ये हम नहीं समझ पाते, हम केवल थोड़ा सा पढ़ लेते हैं और समझते हैं कि मैं सब समझ गया हूँ।

मैं एक उदाहरण हमेशा लोगों को देता हूँ कि एक घर में पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं में कमरे हैं और खिड़कियाँ भी हैं। पूर्व दिशा में जिसका कमरा है वह कहता है कि सूर्य उदय होता है जबकि पश्चिम वाला कहता है कि सूर्य अस्त होता है। पूर्व में रहने वाला कहता है कि मेरा कमरा ठण्डा है जबकि पश्चिम में रहने वाला कहता है कि मेरा कमरा गर्म है। अब इसमें सत्य क्या और असत्य क्या? विचार करके देखें कि पूर्व वाला व्यक्ति कहता है कि सूर्योदय होता है इसलिए मेरा कमरा ठण्डा है जबकि पश्चिम में रहने वाला कहता है कि सूर्यास्त के कारण मेरा कमरा गर्म रहता है इन दोनों मतों में सत्य क्या और असत्य क्या है? वास्तव में सत्य दोनों हैं क्योंकि जिसने जैसा देखा उसने वैसा ही अनुभव किया। इसी प्रकार शास्त्रों के विषय में भी है कि हमने शास्त्र को थोड़ा पढ़ लिया और हम सोचते हैं कि हम सर्वज्ञ हो गये। शास्त्रों में कहा गया है- **'आत्मा त्वं गिरिजामतिः'**। हमें बस इतना ही लेना है, हम भगवान से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि आप आत्मा हो और गिरिजा मति अर्थात् बुद्धि है, समझ है। हमारे यहां देखा जाता है ब्रह्मा के साथ सरस्वती है अर्थात् सृष्टि के निर्माण हेतु सरस्वती (बुद्धि) की आवश्यकता है। विष्णु हैं तो लक्ष्मी हैं, सृष्टि चलाना है तो लक्ष्मी (धन) की आवश्यकता है। शिव के साथ पार्वती यानि करुणारूप है। यदि हम शास्त्र की दृष्टि से विचार करते हैं तो मार्कण्डेय पुराण के उत्तरखण्ड (श्रीदुर्गा सप्तशती) के सप्तश्लोकी दुर्गा प्रार्थना में एक श्लोक आता है-

'दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भयहारिणी का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदाऽर्द्रचित्ताः।।'

जब हमारे अन्तर में विचित्र विचार आते हैं तो इसका अर्थ है कि उस समय हम उस आत्मा से पृथक हो गए हैं, उस गिरिजा मति से अलग हो गए हैं तब हमारे चित्त में ऐसे विचार आते हैं क्योंकि स्वस्थ पुरुष के मन में सदैव कल्याणकारी विचार ही आएंगे।

इस श्लोक के माध्यम से साधक प्रार्थना करता है कि हे दुर्गे! आपके स्मरण मात्र से भय चला जाता है और स्वस्थ पुरुष को आप कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करो। जब हमारे अन्तर में विचित्र विचार आते हैं तो इसका अर्थ है कि उस समय हम उस आत्मा से पृथक हो गए हैं, उस गिरिजा मति से अलग हो गए हैं तब हमारे चित्त में ऐसे विचार आते हैं क्योंकि स्वस्थ पुरुष के मन में सदैव कल्याणकारी विचार ही आएंगे। हे माता! आप दु:ख, भय और दरिद्रता का नाश करने वाली हैं। आपके अतिरिक्त और कौन है जो हमारा उपकार कर सके, हमारी रक्षा कर सके? जब उपकार की चर्चा होती है तो हम सोचते हैं कि मैं उपकार कैसे करूँ? मानव ने इस संसार को पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में बाँट दिया है जबकि शास्त्र कहता है कि प्रकृति और पुरुष अभिन्न है। बाबाजी कहा करते थे कि यदि शरीर स्त्री का है तो उसमें 50 प्रतिशत वीर्य पुरुष का है और पुरुष के शरीर में 50 प्रतिशत रज स्त्री का होता है। चाहे वो स्त्री हो या पुरुष उसका अपना 50 प्रतिशत भाग ही उसके शरीर में होता है। शैव-दर्शन और अन्य शास्त्रों में भी जब हम सृष्टि को देखते हैं तो हमें केवल एक अभिन्न पराशिव ही दिखाई देता है परन्तु जैसे-जैसे सृष्टि का निर्माण होता है **'एकमेव बहुस्यामि'** का विचार उस परमशिव में आता है और सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति होती है। मातृशक्ति पर हम चर्चा कर रहे हैं तो हमें देखना कि आज के इस समाज में घर की व्यवस्था ठीक प्रकार से चलाने के लिए माताएँ भी नौकरी इत्यादि करती हैं। वास्तव में हम देखें कि माताएँ क्या-क्या करती हैं तो माताएँ सर्वप्रथम घर चलाती हैं। घर चलाना जैसे- भोजन पकाना, साफ-सफाई करना, कपड़े धोना, कम्प्यूटर चलाना, घर के सभी सदस्यों की देख-रेख करना इत्यादि कार्य करती हैं। सप्ताह भर इन सभी कार्यों को करते हुए थकती नहीं है और ना ही किसी से शिकायत करती है। पुराने समय में घर की माता छोटे-छोटे कार्य बड़ी सहजता से कर लेती थीं और परिवार में किसी को भी पता नहीं चलता था। सबसे विस्मय तो तब होता था जब ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाली माता अपने घर का छोटा-मोटा प्लम्बिंग इत्यादि का

यदि हमें अपने इस देश की स्थिति को सुधारना है तो हमें अपनी आदतें बदलनी पड़ेगीं। आज हम ये मातृदिवस, पितृदिवस मनाते हैं तो स्वयं का दिवस क्यों नहीं मनाते? क्यों हम अपनी जिम्मेदारियों को दूसरों के लिए छोड़ना चाहते हैं?

कार्य खुद ही कर लेती थीं तो विचार आता था कि इन्होंने ये सब सीखा कब और पूछने पर वो कहती थीं कि छोटे-छोटे कार्य के लिए बाहर से किसे बुलाना? घर में रहते हुए हम गन्दगी फैला भी देते हैं तो हम ये नहीं सोचते कि इसकी सफाई कैसे सम्भव है परन्तु माता उसे अपना दायित्व समझ कर करती रहती है। गन्दगी करने की हमारी आदत इतनी सहज हो गयी है कि हमें समझ ही नहीं आता कि मैं ये गलती कर रहा हूँ और यदि हमें ये पता चल जाता है कि ये गलती मुझसे हो रही है तो उसे तुरन्त ठीक करने का प्रयास करना चाहिए। यदि वो गलती हम ठीक नहीं कर सकते तो इस सम्बन्ध में किसी समझदार व्यक्ति को बताना चाहिए जिससे वो गलती ठीक की जा सके। मेरा एक प्रश्न हमेशा से सबके लिए है कि हम अपना दायित्व कब समझेंगे? यदि हमें अपने इस देश की स्थिति को सुधारना है तो हमें अपनी आदतें बदलनी पड़ेगीं। आज हम ये मातृदिवस, पितृदिवस मनाते हैं तो स्वयं का दिवस क्यों नहीं मनाते? क्यों हम अपनी जिम्मेदारियों को दूसरों के लिए छोड़ना चाहते हैं? सभी कहते हैं कि गलती करने वाले को प्रेम से समझाओ परन्तु गलती करने वाला समझना ही नहीं चाहता। कबीरदासजी कहते हैं- **'मैं केहि समझाऊँ, सब जग अन्धा।'** अर्थात् मैं किसे समझाऊँ क्योंकि जिसे भी समझाने जाऊँ वह समझना ही नहीं चाहता और कहता है कि मैं सब समझ गया। पुन: हम माता के विषय में चर्चा करते हैं कि माता का हमारे जीवन में क्या योगदान है क्योंकि माँ जब हमें कहती है कि ये मत करो, वहाँ मत जाओ तो हमें लगता है कि ये क्यों हमें ऐसा करने से रोकती है और हम माँ से रूठ जाते हैं परन्तु जब किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तो हम माँ के पास ही जाते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति माता के पास ही जाकर पूर्ण हो सकती है। माता का वात्सल्य भी देखिए- एक उदाहरण के साथ समझाने का प्रयास करता हूँ कि माता यदि घर में कुछ कार्य कर रही है और बच्चा घर के पीछे खेल रहा है, खेलते समय बच्चा गिर जाता है या उसे चोट लग जाती है तो उसकी पुकार पर माँ बिना एक पल की देर किये उसके पास पहुंच जाती है। जो माता अपने घर के कार्यों में व्यस्त और थकी होती है अपने बच्चे की

इस मातृदिवस, पितृदिवस को हम प्रतिदिन मनाएँ और सदैव अपने जीवन में 'समभाव' लाते हुए प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करें।

एक पुकार पर अपने सारे कार्य भूल कर दौड़ पड़ती है। उस समय माता को केवल अपने बच्चे की ही चिन्ता रहती है। माता अपने जीवन में बहुत सम्बन्धों से जानी जाती हैं। किसी की माँ, किसी की बहन, किसी की बुआ, तो किसी की पत्नी। इस प्रकार एक स्त्री के जीवन में बहुत सारे रिश्ते आते हैं और वह सभी रिश्तों को सहजता से निभाते हुए अपना जीवन यापन करती है। आप सभी से मैं कहना चाहता हूँ कि इस मातृदिवस, पितृदिवस को हम प्रतिदिन मनाएँ और सदैव अपने जीवन में 'समभाव' लाते हुए प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करें। इस दिवस पर आज हम सभी यह दृढ निश्चय करें कि सर्वप्रथम तो हम सज्जन बनें, इस संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो सज्जन न बन सकता है। सज्जन बनकर हम सज्जनों से ही अपनी मित्रता, अपना सम्बन्ध बनाएँ। आज के समय में हम देखते हैं कि सोशल मीडिया पर एक आदमी 300 ऑनलाइन लोगों के साथ बैठा होता है फिर भी अकेला होता है और एक आदमी अपने दो-तीन मित्रों के साथ ही बैठा होता है फिर भी प्रसन्न होता है क्योंकि वो 300 होते हुए भी एक कल्पना जैसे हैं और पास के 2-3 होकर भी साक्षात हैं क्योंकि इनसे हमें वो स्नेह, वो आनन्द प्राप्त हो सकता है जिसकी हमें जरूरत होती है और वो तीन सौ, पाँच सौ, हजार होते हुए भी हमें वो आनन्द नहीं दे सकते। ये आधुनिक युग की नयी बीमारी है अकेलापन, इस अकेलेपन से हम उभर नहीं पाते और हम गलत मार्ग पर चल देते हैं। हमारे आश्रम में अकेलापन सम्भव ही नहीं है क्योंकि यहाँ सदैव कोई न कोई मिल ही जाता है। साथ में रहकर हमारे बीच एक सम्बन्ध बन जाता है जिसे हम प्रेम कहते हैं। प्रेम भी हम तभी करें जब हमें पूरा विश्वास हो कि हम इस सम्बन्ध को निभा सकते हैं या फिर हम उस व्यक्ति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। कभी-कभी इस सम्बन्ध में दूरी बन जाने पर हम परेशान हो जाते हैं और हमारे मन में विचित्र भाव आने लगते हैं और इन भावों में कभी-कभी हम गलत कदम उठा लेते हैं। इन सभी कुविचारों को अपने से दूर करने के लिए ही हमें सत्संग करना चाहिए और अपने मन को सही मार्ग पर लगाना चाहिए। मन सही मार्ग पर कब लग सकता है? जब हम ध्यान, योग, स्वाध्याय और शास्त्र-चिन्तन

साधना करते समय त्रुटियां भी होती हैं परन्तु गुरु के सहवास में वो सभी सफल हो जाती हैं।

करेंगे तब जाकर हमें ये समझ आ सकती है कि हमारा मन गलत मार्ग पर जा रहा है और फिर उस मन को वापस लाने के लिए भी वही शास्त्रचर्चा और सन्तों का, वरिष्ठ लोगों का संग ही आधार बन सकता है। जीवन में हम साधना और ध्यान का समय बढाएं तभी हमारा जीवन मुक्त हो सकता है। साधना करते समय त्रुटियां भी होती हैं परन्तु गुरु के सहवास में वो सभी सफल हो जाती हैं। हमें अपनी बुद्धि के अनुसार कर्म करने चाहिए और अपने जीवन को सफल बनाने का हरसंभव प्रयास करना चाहिएं। इन्हीं शब्दों के साथ पुन: आप सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत।

॥ सद्गुरुनाथ महाराज की जय ॥